कलीसिया। अध्याय 23

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसके मार्गदर्शन के लिए, उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया का निर्माण करने के विषय में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर को समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **1 तीमुथियुस 5 - 6 और 2 तीमुथियुस 1**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 तीमुथियुस 5-6 और 2 तीमुथियुस 1) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके एक-दूसरे के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट) *[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* **(10) यूहन्ना 10:28**

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।
(10) यूहन्ना 10:28 : और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया और संस्कृति]* **मानवीय संस्कृति और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति**

प्रस्तावना। यह शिक्षा मानवीय संस्कृति और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के विषय में है। हम देखते हैं कि मानवीय संस्कृति लगातार बदल रही है, लेकिन परमेश्वर के राज्य की संस्कृति हमेशा एक समान ही रहती है। नियमावली 6, परिशिष्ट 7 और 8 में यह पाया जाता है, कि बाइबल अपने जीवित माता-पिता और उनके पूर्वजों के साथ मसीही सम्बन्ध के बारे में क्या सिखाती है।

क. राष्ट्रों की बदलती संस्कृति

प्रस्तावना। लोगों और उनके व्यवहार के बीच सभी अलग-अलग सम्बन्ध उनकी संस्कृति से काफी प्रभावित होते हैं।

1. "संस्कृति" की परिभाषा।

खोजें व चर्चा करें। "संस्कृति" क्या है? संस्कृति के विभिन्न घटक क्या हैं?
ध्यान दें।
लोगों के किसी भी समूह की संस्कृति उनके सांसारिक-दृष्टिकोण, सत्य, विश्वास, अंधविश्वास और मूल्य हैं जो उनके दृढ़ विश्वास, अनुभव, व्यवहार, रिश्तों और संस्थानों (रीति-रिवाजों और परंपराओं) में व्यक्त किये जाते हैं।

2. मानव संस्कृति का उद्गम।

पढ़े उत्पत्ति 1:28-29; 2:15; 3:17; 4:16-22; 10:1 से 11:9
खोजें और चर्चा करें। मानव संस्कृति कैसे उत्पन्न हुई?

ध्यान दें। उत्पत्ति अध्याय 1 से 11 संसार में मानव संस्कृति की शुरुआत का वर्णन करते हैं : यह सांसारिक जगत की शुरुआत और मानवजाति (आदम और हव्वा के वंशज)[1] की शुरुआत का वर्णन करते हैं। यह मनुष्य के

लिए परमेश्वर के प्रकाशन और मानव पाप की शुरुआत (परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन) का वर्णन करते हैं। यह मानव पीड़ा की शुरुआत और उद्धार की परमेश्वर की योजना की शुरुआत का वर्णन करते हैं। और अन्त में, यह मानव के पारिवारिक जीवन की शुरुआत, मानव निर्मित सभ्यता की शुरुआत और संसार के विभिन्न राष्ट्रों की शुरुआत का वर्णन करते हैं, प्रत्येक अपनी संस्कृति के साथ।

बाइबल के अनुसार, मानव संस्कृति की उत्पत्ति इस संसार में मानवजाति के इतिहास की शुरुआत में है। जैसे ही लोगों के विभिन्न समूह एक दूसरे से अलग हो गए और विभिन्न राष्ट्रों में विकसित हुए (उत्पत्ति 11:1-9), उनकी संस्कृतियाँ भी अलग हो गयीं। सदियों से राष्ट्रों ने जीवित परमेश्वर और उसकी इच्छा को भुला दिया। "यहोवा ने देखा कि मनुष्य की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गयी है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है" (उत्पत्ति 6:5)। इसलिए मूल मानव संस्कृति में धार्मिक मूर्तिपूजा, दार्शनिक परिकल्पनाओं और मानसिक कल्पनाओं में पतन होता चला गया। इससे विभिन्न मानव संस्कृतियों का गठन होता ही चला गया। आज, दुनिया के राष्ट्र शायद ही कल्पना कर सकते हैं कि इतिहास की शुरुआत में सभी की एक ही मूल संस्कृति थी।

3. एक मूल्य प्रणाली का उद्गम।

खोजें और चर्चा करें। दुनिया में लोगों ने किस तरह से यह जान लिया कि क्या *अच्छा* है और क्या *सही* है?

पढ़ें भजन 19:1-4; प्रेरितों के काम 17:24-27; रोमियों 1:18-20;25;28;32; ***पढ़ें*** रोमियों 2:14-15
ध्यान दें।

परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के माध्यम से अपनी कुछ सच्चाई को प्रगट किया। सृष्टि को देखकर, लोग बाइबल के परमेश्वर के अस्तित्व को सृष्टिकर्ता और रचयिता के रूप में देखते व समझते हैं तथा ऊर्जा (प्रकाश), पदार्थ, गुरुत्वाकर्षण, स्थान और समय बनाने की परमेश्वर की अद्भुत सामर्थ्य को जान पाते हैं। वे सृष्टि के भीतर स्थापित अद्भुत भौतिक और रासायनिक नियमों को खोज सकते हैं और उसकी सृष्टि की सुन्दरता और उनकी व्यवस्था का निरीक्षण कर सकते हैं।

परमेश्वर मनुष्य के मन, हृदय और विवेक में अपनी कुछ सच्चाइयों को प्रगट करता है। अपने हृदय, दिमाग और विवेक की आवाज़ सुनकर, लोग बुनियादी नैतिक सत्यों और मूल्यों को जानते और समझते हैं, जैसे कि आज्ञाएँ : "तू हत्या न करना", "तू व्यभिचार न करना", "तू चोरी न करना" और "तू झूठ न बोलना या झूठी साक्षी न देना"।

4. हर मानव संस्कृति के अच्छे व बुरे पहलू।

चर्चा करें। एक संस्कृति के अच्छे और बुरे पहलू क्या हैं?
पढ़ें व्यवस्थाविवरण 16:18-20; 1 राजा 10:1-9 और यिर्मयाह 7:22-29; 10:1-5; 2 तीमुथियुस 3:1-5
ध्यान दें।

सभी मानव संस्कृतियों में अच्छे और स्वीकार्य पहलू हैं। उदाहरण के लिए, ईमानदार राजनेता और व्यवसायी, नियम और निष्पक्ष न्यायाधीश, मेहनती मज़दूर और अच्छी तरह से व्यवहार करने वाले नागरिक, दया के संस्थान और सौजन्य और प्रेम के सम्बन्ध।

लेकिन, क्योंकि सभी लोग पापी हैं, संसार में सभी मानव संस्कृतियों में बुराई और अस्वीकार्य पहलू हैं। मानव संस्कृतियों में गैर-मसीही दर्शन, राजनीतिक विचारधाराएँ और झूठे धार्मिक धर्मशास्त्रों के आधार पर विश्वव्यापी विचार शामिल हैं। उनके धार्मिक दृढ़ संकल्प, कुछ धार्मिक शिक्षक या भविष्यद्वक्ता द्वारा बनाई गई अटकलों और झूठ पर आधारित हैं। उनकी मूल्य प्रणाली और व्यवहार (उदाहरण के लिए महिलाओं के लिए) अक्सर अन्यायपूर्ण और अनैतिक होते हैं, सरकारी संस्थान, धार्मिक आधारों (जिहाद, सम्मान का बदला) पर लोगों को मारने के विरुद्ध, नैतिक आधार (गर्भपात, मृत्यु) पर हत्या के विरुद्ध, अपराधियों के विरुद्ध (ड्रग्स गिरोह, हथियारों के साथ कब्जे और ख़तरे, गुप्त हमलों और डाकू) या सभी प्रकार के यौन दुर्व्यवहार (बहुविवाह, तलाक, कुछ समय के लिए अवैध-सम्बन्ध और व्यभिचार, समलैंगिक सम्बन्ध, वेश्यावृत्ति, प्रेमी लड़कों, एस्कॉर्ट सेवाओं, नाइटक्लब, अश्लीलता, व्यभिचार और बच्चों के प्रति गलत विचार) और इंटरनेट पर सभी प्रकार के दुरुपयोग (हिंसा, अश्लीलता, और धोखाधड़ी) से अपने नागरिकों की रक्षा नहीं

करते हैं। पापपूर्ण संस्कृति में शामिल हैं : वह नागरिक जो अजनबियों (अल्पसंख्यक समूहों), शरणार्थियों (शरण तलाशने वालों), गरीबों और विकलांगों की सहायता नहीं करते हैं; बड़ी कंपनियों और बैंकों के निदेशक जो स्वयं को समृद्ध करते हैं; और सड़कों पर ख़तरनाक और गैर ज़िम्मेदार ड्राइविंग करते हैं। जो लोग अपनी मानव संस्कृति द्वारा नियन्त्रित होते हैं, वे अक्सर बनने के बजाए टूट जाते हैं। इस प्रकार, हर मानव संस्कृति के पापी पहलू लोगों को गुमराह करते हैं, नष्ट करते हैं और लोगों के व्यवहार को पशुओं के समान बना देते हैं।

---

[1]जो लोग इसे अस्वीकार करते हैं, वे बन्दरों से हुए विकास को स्वीकार करते हैं।

प्रत्येक मानव संस्कृति को भी अपने पापपूर्ण पहलुओं में परिवर्तन और सुधार लाना (परिवर्तन) चाहिए ताकि वे परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुरूप बन सकें!

ख. परमेश्वर के राज्य की अनन्त संस्कृति

1. परमेश्वर के राज्य की परिभाषा।

परमेश्वर का राज्य सभी लोगों पर और सारी वस्तुओं पर यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर का पूर्ण राज्य (शासन या संप्रभुता) है। परमेश्वर का साम्राज्य विशेष रूप से यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर का पूर्ण राज्य (शासन या संप्रभुता) है जो अपने लोगों के हृदय में और जीवन में कार्य करता है। यह मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य और आत्मा के उद्धार पर आधारित है। इसके परिणामस्वरूप चार बड़े बदलाव हुए।

- आदि से अन्त तक विश्वासियों का पूर्ण उद्धार।
- इस वर्तमान पृथ्वी पर कलीसिया (विश्वासियों के समुदाय) की स्थापना (संविधान)।
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यक्तिगत जीवन, परिवारों और समाजों का परिवर्तन।
- एक छुड़ाया या पूरी तरह से नवीनीकृत जगत (नया स्वर्ग और नई पृथ्वी)।

2. परमेश्वर के राज्य के विभिन्न पहलू।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य के विभिन्न पहलू क्या हैं?

(1) परमेश्वर का राज्य ईश्वरीय सार्वभौमिक नियम है जो अपने लोगों के हृदय और जीवन के सभी क्षेत्रों में कार्य करता है।

पढ़ें मत्ती 6:10,33; मत्ती 13:31-35,44-46; लूका 17:21

ध्यान दें। खेत में ख़जाने और कीमती मोती के दृष्टान्त सिखाते हैं कि परमेश्वर के राज्य को अन्य सभी प्रयासों से ऊपर होना चाहिए और यह हमेशा प्रासंगिक है। राई के दाने और खमीर के दृष्टान्त सिखाते हैं कि परमेश्वर का राज्य प्रत्येक और सब वस्तुओं में प्रवेश करता है। परमेश्वर का राज्य अन्य सभी चीज़ों (जनजातियों, राष्ट्रीय, राजनीतिक, विचारधारात्मक, धार्मिक और सांस्कृतिक आरोपों) को ढाँपता है। मत्ती 13:31 की तुलना मरकुस 4:30 के साथ करके यह स्पष्ट हो जाता है कि "स्वर्ग का राज्य" यह बताता है कि "स्वर्ग का राज्य" "परमेश्वर के राज्य" के समान है, क्योंकि यहूदी लोग परमेश्वर का नाम व्यर्थ में नहीं लेना चाहते हैं। वे "स्वर्ग में रहने वाले" की बात करते हैं।

(2) परमेश्वर का ईश्वरीय राजत्व अपने लोगों के उद्धार को आदि से लेकर अन्त तक ले जाता है।

पढ़ें प्रेरितों के काम 8:12; 28:30-31; मरकुस 1:14-15; 10:25-26; यूहन्ना 3:3-8; 1 कुरिन्थियों 6:9-11; कुलुस्सियों 1:13

ध्यान दें। सुसमाचार "परमेश्वर के राज्य के बारे में अच्छी ख़बर" है। सुसमाचार न केवल मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, पश्चाताप और विश्वास, बल्कि अपने लोगों के हृदय और जीवन में परमेश्वर के राज्य के बारे में भी बताता है। जब लोग पश्चाताप और विश्वास करते हैं तब उद्धार की शुरुआत होती है। इसे न्याय कहा जाता है। जैसे-जैसे विश्वासी लोगों को उनके पापपूर्ण विचारों, शब्दों और आदतों से अधिक से अधिक बचाया जाता है, उनका उद्धार सम्पूर्ण जीवन में जारी रहता है। इसे पवित्रता कहते हैं। और विश्वासियों को अंततः सब प्रकार के पापों और मृत्यु से बचाया जाता है। इसे महिमा कहते हैं।

परमेश्वर का राज्य मसीह के पहले आगमन पर आया (मत्ती 12: 28-29), जो अब पूरी दुनिया में वास्तविक रूप से बढ़ रहा है (मत्ती 13:31-33), लेकिन केवल मसीह के दूसरे आगमन पर ही परमेश्वर का राज्य पूर्ण और सिद्ध बनेगा (मत्ती 13:47-50; मत्ती 25:34)। जो भी पश्चाताप करता है और यीशु मसीह पर विश्वास करता है, वह राज्य में प्रवेश करता है। राज्य में प्रवेश करना, नए सिरे से जन्म लेने के समान है (यूहन्ना 3: 3), अन्धकार के वश से छुड़ाया जाना (कुलुस्सियों 1:13) या बचाया जाना (मरकुस 10: 23,26)। मत्ती 5 से 7 में पहाड़ी उपदेश सिखाते हैं कि जीवन के हर पहलू को यीशु मसीह के प्रभुत्व में लाया जाना चाहिए। परमेश्वर के राज्य के सभी नागरिकों को परमेश्वर के राज्य की संस्कृति और जीवन शैली को अपनाना चाहिए।

(3) परमेश्वर का ईश्वरीय राजत्व मसीही कलीसिया की स्थापना की ओर ले जाता है।

पढ़ें मत्ती 16:18-19; यूहन्ना 3:5; 1 कुरिन्थियों 12:12-13; इफिसियों 1:13,20-21; 1 पतरस 2:4-10; मत्ती 13:24-30

ध्यान दें। मसीही कलीसिया उन लोगों का प्रत्यक्ष समुदाय है जिसमें यीशु मसीह को राजा के रूप में स्वीकार किया जाता है। मसीही कलीसिया उन लोगों का समुदाय है जिन्होंने सुसमाचार सुना है, मसीह पर विश्वास किया है और पवित्र आत्मा से बाँध दिए गए हैं। मसीही कलीसिया परमेश्वर के चुने हुए लोगों का समूह है। उनके पास संसार में राजा, याजक और भविष्यद्वक्ता होने की बुलाहट और कार्य है। उनके पास नमक और जगत की ज्योति होने की बुलाहट है (मत्ती 5:13-16)।

जंगली बीज का दृष्टान्त (मत्ती 13:24-30,36-43) सिखाता है कि परमेश्वर का राज्य (या मसीही कलीसिया) अपने वर्तमान रूप में मसीह के दूसरे आगमन तक एक मिश्रित समुदाय है। विश्वासियों के बीच हमेशा अविश्वासी और दबाने वाले लोग होंगे। फिर भी, विश्वासियों को यह अनुमति नहीं देनी चाहिए कि अविश्वासी उनकी जीवन-शैली को प्रभावित करें। इसकी बजाय, विश्वासियों को अविश्वासियों की जीवन-शैली को इतना प्रभावित करना चाहिए ताकि वे और अधिक से अधिक परमेश्वर के राज्य की जीवन-शैली के समान बन जाएँ (यिर्मयाह 15:19)! विश्वासियों को स्वयं को चारों ओर के संसार के समान नहीं ढालना चाहिए, लेकिन उन्हें लगातार परमेश्वर को अपने आपको फिर से बनाने की इजाजत देनी चाहिए जैसा उसने इरादा किया था (रोमियों 12:1-2)!

(4) परमेश्वर का ईश्वरीय राजत्व कलीसिया के बाहर दुनिया में व्यक्तिगत लोगों, परिवारों और समाजों को परिवर्तित कर देता है।

पढ़ें मत्ती 11:4-6; 25:31-40; लूका 3:10-14।

ध्यान दें। अपने परिवारों और समाजों के भीतर मसीहियों की गतिविधियों ने पूरे इतिहास में स्कूलों और विश्वविद्यालयों, क्लीनिकों और अस्पतालों की स्थापना, कुष्ठरोगों की देखभाल और अन्य बहिष्कृत, अन्धे, बहरे और विकलांगों, गरीबों और उत्पीड़ित लोगों की सहायता की है, सरकार को करों का भुगतान, विरूपण और भ्रष्टाचार का प्रतिरोध, न्याय और धार्मिकता, स्वस्थ नैतिकता, समाज में मूल्यों और मानदण्डों का प्रचार आदि किया है।

(5) परमेश्वर का ईश्वरीय राजत्व अंततः एक छुड़ाए हुए और परिवर्तित जगत (नया स्वर्ग और नई पृथ्वी) की ओर जाता है।)

पढ़ें मत्ती 13:36-43; 25:31-34; प्रेरितों के काम 3:21; प्रकाशितवाक्य 21:1-2, 9-10,27

ध्यान दें। मसीह के दूसरे आगमन पर, वह अपने राज्य में से उन सभी चीज़ों को, जो पाप करते हैं और उन सभी लोगों को जो बुरे कार्य करते हैं, बाहर निकाल देगा और उन्हें आग की भट्टी में फेंक देगा। अन्त में, केवल धर्मी लोग ही अपने परमेश्वर के राज्य में रहेंगे। किसी भी प्रकार के अशुद्ध, शर्मनाक या धोख़ेबाज लोग इसमें प्रवेश नहीं करेंगे, लेकिन केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने की पुस्तक में लिखे होंगे, वही प्रवेश करने पाएँगे (प्रकाशितवाक्य 21:27)। अन्त में, परमेश्वर के राज्य में सब कुछ नया होगा। यह नया स्वर्ग और नई पृथ्वी है जिस पर स्वर्गीय यरूशलेम नए यरूशलेम के रूप में उतरता है। यह "मेम्ने की दुल्हन" की तुलना में कुछ और नहीं है, अर्थात्, मसीही कलीसिया जिसमें सभी छुड़ाये हुए लोग सर्वदा वास करेंगे (रोमियों 11:25-26)।

तथ्य यह है कि, वर्तमान समय में मसीह के दूसरे आगमन से पहले, परमेश्वर का राज्य (राजत्व) अक्सर अनुपस्थित प्रतीत होता है, इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान ईश्वर नहीं है। 2 पतरस 3:9 के अनुसार, परमेश्वर पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के विषय में धीरज धर रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि वे पश्चाताप करें।

3. परमेश्वर के राज्य की विशेषताएँ।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

(1) परमेश्वर के राज्य का एक वर्तमान और भविष्य रूप है।

पढ़ें मत्ती 8:11-12; 12:28; 13:36-43; 19:14; 21:42-45

ध्यान दें।

अपने वर्तमान रूप में, परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह की तरह है जो राज्य के पुत्रों को बोता है और शैतान इस वर्तमान दुनिया में दुष्टों के पुत्रों को बोता है (मत्ती 13:36-39)। शैतान और दुष्ट के पुत्र अभी-भी राज्य के वर्तमान रूप में मौजूद और सक्रिय हैं, लेकिन वे भविष्य में पूरी तरह से हटा दिए जाएँगे!

अपने वर्तमान रूप में, पश्चिम और पूर्व में के लोगों को पाप और बुरी आत्माओं से मुक्त किया जा रहा है, और उन्हें सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से मसीह के राज्य (राजत्व) के तहत लाया जाता है (मत्ती 12:28; कुलुस्सियों 1:13)।

राज्य उन लोगों को दिया जाता है जो फलदायक होंगे (मत्ती 21:43)। हालाँकि, परमेश्वर के लोगों (नाममात्र विश्वासी) के वंशज, जो राजा को पाने में असफल होते हैं, बाहर फेंक दिए जाते हैं (मत्ती 8:11-12)।

भविष्य में, स्वर्गदूत उन सभी बुरे लोगों और सब कुछ जो परमेश्वर के राज्य में पाप का कारण बनते हैं, उन्हें नरक में फेंक देंगे (मत्ती 13:41)!

(2) परमेश्वर का राज्य एक ही समय में एक प्रकाशन भी है और एक रहस्य भी है।

पढ़ें मत्ती 13:11-17

ध्यान दें।

परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान उन लोगों को प्रगट किया जा रहा है जो परमेश्वर के वचन के बीज के लिए अपने हृदयों को खोलते हैं। परन्तु परमेश्वर का राज्य उन लोगों के लिए एक रहस्य बना हुआ है जो मसीह और बाइबल के वचनों के विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर बनाये रहते हैं।

(3) परमेश्वर का राज्य वर्तमान दुनिया में है, लेकिन वर्तमान दुनिया का नहीं है।

पढ़ें लूका 17:20-21; मत्ती 5:19-20; यूहन्ना 18:36

ध्यान दें।

परमेश्वर का राज्य हमारे बीच में है, हमारे हृदय में, हमारे जीवन में अभ्यास और सिखाया जाता है, और फिर भी इस दुनिया के किसी अन्य राज्य की तरह नहीं है। यह एक साम्राज्यवादी राजनीतिक सरकार, एक सैन्य रक्षा या एक धार्मिक साम्राज्य के समान नहीं है जिसे मनुष्य द्वारा बनाया गया हो, बल्कि एक ऐसा राज्य है जिस पर स्वर्ग से यीशु मसीह द्वारा एक ईश्वरीय तरीके से राज्य किया जाता है।

(4) परमेश्वर का राज्य छोटे से शुरू होता है, लेकिन अंततः सभी में फैल जाएगा (सब जगह भर जाएगा)।

पढ़ें मत्ती 13:31-33 और यशायाह 9:6-7; दानिय्येल 2:34-35,44-45; मत्ती 28:18

ध्यान दें।

परमेश्वर के राज्य की शुरुआत बहुत छोटी थी। लेकिन यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि देशों में भी धीरे-धीरे विकसित होता जा रहा है। मसीह के माध्यम से परमेश्वर का ईश्वरीय राज्य लगातार इस दुनिया के प्रत्येक देश के लोगों के हृदय में और भौगोलिक दृष्टिकोण से अधिक से अधिक क्षेत्रों तक फैलता जा रहा है!

अन्त में, मसीह के दूसरे आगमन और अंतिम न्याय के दिन के बाद (मत्ती 13:41; 25:31-46), परमेश्वर का राज्य सब जगह फैल जाएगा (सब जगह भर जाएगा) (मत्ती 13:33)। स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी एक न्यायी के नीचे लाए जाएँगे, अर्थात्, यीशु मसीह के (इफिसियों 1:10)। यीशु मसीह हर प्रकार से सब चीजों को पूर्ण करेगा (इफिसियों 1:23)। राई के दाने और खमीर के दृष्टान्त यह सिखाते हैं। हर घुटना उसके सामने झुकेगा और हर जीभ उसका अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही महिमान्वित प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)। परमेश्वर का राज्य आख़िरकार अन्य सभी सांसारिक राज्यों को चूर-चूर कर देगा और उनका अन्त कर डालेगा (दानिय्येल 2:44), लेकिन स्वयं कभी ख़त्म नहीं होगा (यशायाह 9:6)। परमेश्वर का राज्य सर्वदा के लिए बना रहेगा!

ग. अपनी संस्कृति में परिवर्तन लाने का उत्तरदायित्व

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों के ऊपर जहाँ तक संभव हो, अपनी संस्कृति के गलत या पापपूर्ण पहलुओं को अपने जीवन के सम्बन्ध में बदलने का उत्तरदायित्व क्यों है?

1. यीशु मसीह मसीहियों को एकमात्र परिपूर्ण संस्कृति, परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के बारे में सिखाता है।

पढ़ें मत्ती 5:1-16 (मत्ती अध्याय 5 से 7)।

ध्यान दें।

पृथ्वी पर अपने थोड़े समय के रहने के दौरान, यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में बहुत कुछ सिखाया! संसार में एकमात्र परिपूर्ण संस्कृति बाइबल के परमेश्वर के राज्य की संस्कृति है! परमेश्वर के राज्य की संस्कृति बाइबल में प्रगट हुई, कहीं और नहीं। बाइबल परमेश्वर के सांसारिक-दृष्टिकोण, परमेश्वर की सच्चाई, लोगों को किस पर विश्वास करना चाहिए और संसार के हर देश में लोगों का क्या मूल्य होना चाहिए, इस बात को प्रगट करती है! यह बताती है कि लोगों का दृढ़ विश्वास कैसा होना चाहिए और परमेश्वर की दृष्टि में कौन-सी भावनाएँ और अनुभव भले हैं। यह बताती है कि कैसे लोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ संसार के प्रत्येक देश में अपने सामाजिक सम्बन्धों और संस्थानों में व्यवहार करना चाहिए!

2. यीशु मसीह मसीहियों को परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति को बढ़ावा देने का आदेश देता है।

पढ़ें उत्पत्ति 1:28; 2:15, मत्ती 6:10,33; 24:14

ध्यान दें।

मसीहियों के ऊपर अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य को खोजने का उत्तरदायित्व है। अन्य लोगों और संसार के सभी राष्ट्रों के जीवन में परमेश्वर के राज्य को लाने के लिए प्रार्थना करने का उनका उत्तरदायित्व है। संसार के सभी राष्ट्रों में परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने का उनका उत्तरदायित्व है!

यह मसीहियों का कार्य नहीं है कि वें अपने देश की संस्कृति को बदलें और न ही उनके पास ऐसा करने की सामर्थ्य है। हालाँकि, उनका उत्तरदायित्व लोगों को अपनी संस्कृति में बुलाना है ताकि वे पश्चाताप करें और अपने निजी जीवन में परिवर्तन ला सकें। वे लोगों से अपने देश की संस्कृति के हर गलत या पापी पहलू को बदलकर परमेश्वर के राज्य की संस्कृति की तरह बनने का आग्रह करते हैं। इसलिए, जब वे परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को सुनते हैं, तो प्रत्येक देश के लोगों को पश्चाताप और बदलने के लिए बुलाया जाता है। उन्हें परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुरूप अपने सांसारिक-दृष्टिकोण, अपनी सच्चाइयों, मान्यताओं, मूल्यों, विश्वास, अनुभव, व्यवहार, सम्बन्धों और संस्थानों को बदलने के लिए बुलाया जाता है! मसीह संसार में इसलिए आया ताकि वे राज्य, परिवारों, समुदायों और राष्ट्रों की संस्कृति को बदलकर परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुसार बन सकें! मसीह संसार को बदलने और लोगों के माध्यम से उनकी संस्कृतियों को बदलने के लिए आया! और वह उनके जीवन में उनकी संस्कृति के गलत या पापपूर्ण पहलुओं से शुरू करना चाहता है!

3. अपने दूसरे आगमन पर यीशु मसीह ईश्वरीय तरीके से मसीहियों और समस्त पृथ्वी को बदल देगा।

पढ़ें मत्ती 13:41-43; प्रेरितों 3:21; रोमियों 8:19-21; 2 पतरस 3:13; 1 यूहन्ना 3:1-3; प्रकाशितवाक्य 21:24-27

ध्यान दें।

यीशु मसीह सबकुछ पुनर्स्थापित करेगा (प्रेरितों 3:21); वह सब कुछ नया कर देगा (प्रकाशितवाक्य 21:5)! वह अपने राज्य में से उन सभी चीज़ों को, जिनके द्वारा पाप होता है और उन सभी लोगों को जो बुरे कार्य करते हैं, बाहर निकाल देगा! अन्त में, अपने दूसरे आगमन के बाद वह अपने राज्य में किसी भी प्रकार के अशुद्ध, शर्मनाक या धोख़ेबाज लोगों को प्रवेश करने की अनुमति नहीं देगा। वह केवल मानव संस्कृतियों की उन वस्तुओं को अपने राज्य के नए यरूशलेम में प्रवेश करने की अनुमति देगा, जो परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रतिबद्ध हैं और परमेश्वर की महिमा करते हैं। फिर भी, जैसे कि सभी व्यक्तिगत मसीहियों को केवल दूसरे आगमन (1 यूहन्ना 3:1-3) में मसीह द्वारा पूरी तरह से परिपूर्ण किया जाएगा, वैसे ही सभी मानव संस्कृतियों के सभी अच्छे पहलुओं को केवल उसके दूसरे आगमन पर मसीह द्वारा पूरी तरह से परिपूर्ण किया जाएगा (रोमियों 8:19-21)।

घ. अपनी संस्कृति के पहलुओं को जाँचना

जैसा कि बाइबल सिखाती है, मसीहियों को परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के प्रकाश में अपनी संस्कृति के हर पहलू का मूल्यांकन करने की ज़रूरत है। अपने पूरे जीवन में, अपने आप से निम्नलिखित प्रश्न पूछें :

- बाइबल के कभी न बदलने वाले सांसारिक-दृष्टिकोण के प्रकाश में मेरा वर्तमान सांसारिक-दृष्टिकोण क्या है?
- बाइबल की अनन्त सच्चाई के प्रकाश में, मैं वर्तमान में किसे सच्चाई के रूप में मानता हूँ?
- बाइबल की विश्वास करने वाली सभी चीज़ों के प्रकाश में, मैं किस पर विश्वास करूँ?
- बाइबल के मूल्यों के प्रकाश में, मेरे वर्तमान मूल्य और मेरी संस्कृति के मूल्य क्या हैं जिन्हें मुझे थामे रहना चाहिए?
- बाइबल के दृढ़ विश्वास के प्रकाश में, मेरा वर्तमान विश्वास किस चीज़ पर है?
- बाइबल मेरी भावनाओं और अनुभवों का मूल्यांकन कैसे करती है?
- बाइबल मेरे वर्तमान सम्बन्धों का मूल्यांकन कैसे करती है?
- बाइबल में दिए गए व्यवहार के प्रकाश में, मेरा वर्तमान व्यवहार कैसा होना चाहिए?
- बाइबल मेरी संस्कृति में पाए जाने वाले विभिन्न राजनीतिक, न्यायिक, शैक्षिक, सामाजिक और धार्मिक संस्थानों का मूल्यांकन कैसे करती है?

दो महत्वपूर्ण अध्ययन देखें :

नियमावली 6, परिशिष्ट 7. हमारे जीवित माता-पिता के साथ सम्बन्ध।

नियमावली 6, परिशिष्ट 8. हमारे पूर्वजों के साथ सम्बन्ध।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रार्थना**

आज जो कुछ आपने सीखा है, उसके लिए ***समूह में एक-एक करके परमेश्वर से प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन में विभाजित करें और आज जो कुछ आपने सीखा है उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **दूसरे अध्याय के लिए कार्य**

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि बनाने दें)।

8. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
9. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "मानवीय संस्कृति और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति" पर प्रचार करें, शिक्षा दें और अध्ययन करें।
10. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2 तीमुथियुस 2 - 4** के अध्यायों को आधा प्रतिदिन पढ़ने के लिए शान्त समय चुन लें।
    सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
11. याद करना। **यूहन्ना की आयतों की समीक्षा करें** (6) यूहन्ना 5:24; (7) यूहन्ना 6:37; (8) यूहन्ना 7:38; (9) यूहन्ना 8:12; (10) यूहन्ना 10:28 - पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
12. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें (**यूहन्ना 10**)। बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।
13. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है (भजन 5:3)।
14. मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के विषय में अपनी नोटबुक में लिख लें। जो नोट्स आपने अपने शान्त समय में बनाए थे, जिन नोट्स को आपने याद किया था, अपने बाइबल अध्ययन के नोट्स और इस कार्य के नोट्स को भी इसमें शामिल करें।